

## Chapter 4

### कल्पतरुः

2marks

प्रश्न 1.

एकपदेन उत्तरं लिखत

(क) जीमूतवाहनः कस्य पुत्रः अस्ति?

उत्तरम् :

जीमूतकेतोः।

(ख) संसारेऽस्मिन् कः अनश्वरः भवति?

उत्तरम् :

परोपकारः।

(ग) जीमूतवाहनः परोपकारैकफलसिद्धये कम् आराधयति?

उत्तरम् :

कल्पपादपम्।

(घ) जीमूतवाहनस्य सर्वभूतानुकम्पया सर्वत्र किं प्रथितम्?

उत्तरम् :

यशः।

(ङ) कल्पतरुः भुवि कानि अवर्ष?

उत्तरम् :

वसूनि।

प्रश्न 2.

अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत -

(अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-)

(क) कञ्चनपुरं नाम नगरं कत्र विभाति स्म?

(कञ्चनपुर नामक नगर कहाँ सुशोभित था?)

उत्तरम् :

कञ्चनपुरं नाम नगरं हिमवतः शिखरे विभाति।

(कञ्चनपुर नामक नगर हिमालय पर्वत के शिखर पर सुशोभित था।)

(ख) जीमूतवाहनः कीदृशः आसीत्?

(जीमूतवाहन कैसा था?)

उत्तरम् :

जीमूतवाहनः महान् दानवीरः सर्वभूतानुकम्पी च आसीत्।

(जीमूतवाहन महान् दानवीर और सभी प्राणियों पर कृपा करने वाला था।)

(ग) कल्पतरोः वैशिष्ट्यमाकर्ण्य जीमूतवाहनः किं अचिन्तयत्?

(कल्पवृक्ष के वैशिष्ट्य को सुनकर जीमूतवाहन ने क्या सोचा?)

उत्तरम् :

अहं ईदृशात् अमरपादपात् अभीष्टं मनोरथं साधयामि इति।

(मैं इस प्रकार के अमरवृक्ष से अभीष्ट मनोरथ को सफल करूँगा।)

(घ) हितैषिणः मन्त्रिणः जीमूतवाहनं किम् उक्तवन्तः?

(हितकारी मन्त्रियों ने जीमूतवाहन से क्या कहा?)

उत्तरम् :

हितैषिणः मन्त्रिणः जीमूतवाहनम् उक्तवन्तः यत्-"युवराज ! योऽयं सर्वकामदः कल्पतरुः तवोद्याने तिष्ठति स तव सदा पूज्यः। अस्मिन् अनुकूले स्थिते सति शक्रोऽपि अस्मान् बाधितुं न शक्नुयात्।"

(हितकारी मन्त्रियों ने जीमूतवाहन से कहा कि - "युवराज! जो यह सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाला कल्पवृक्ष तुम्हारे बाग में स्थित है, उसकी तुम्हें सदा पूजा करनी चाहिए। इसके अनुकूल होने पर इन्द्र भी हमें हानि नहीं पहुँचा सकता है।")

(ङ) जीमूतवाहनः कल्पतरुम् उपगम्य किम् उवाच? (जीमूतवाहन ने कल्पवृक्ष के पास जाकर क्या कहा?)

उत्तरम् :

जीमूतवाहनः कल्पतरुम् उपगम्य उवाच यत्-"देव! त्वया अस्मत् पूर्वेषाम् अभीष्टाः कामाः पूरिताः, तन्ममैकं कामं पूरय। यथा पृथिवीम् अदरिद्राम् पश्यामि, तथा करोतु देव।"

जीमूतवाहन ने कल्पवृक्ष के पास जाकर कहा कि "हे देव! तुमने हमारे पूर्वजों की सभी मनोकामनाओं को पूर्ण किया है, इसलिए मेरी भी एक कामना (इच्छा) को पूरा कीजिए। मैं जिस प्रकार से पृथ्वी को दरिद्रता से रहित अर्थात् सम्पन्न देखू, वैसा ही आप कीजिए।"

प्रश्न 3.

अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?

(क) तस्य सानोरुपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम्।

उत्तरम् :

हिमवते।

प्रश्न 3.

कस्य गृहोद्यानेः कुलक्रमागतः कल्पतरुः स्थितः?

(किसके घर के बगीचे में कुलक्रम से प्राप्त कल्पवृक्ष था?)

उत्तर :

जीमूतकेतोः गृहोद्याने कुलक्रमागतः कल्पतरुः स्थितः।

(जीमूतकेतु के घर के बगीचे में कुलक्रम से प्राप्त कल्पवृक्ष था।)

प्रश्न 4.

जीमूतकेतुः कल्पतरुम् आराध्य किम् प्राप्नोत्?

(जीमूतकेतु ने कल्पवृक्ष की आराधना करके क्या प्राप्त किया?)

उत्तर :

जीमूतकेतुः कल्पतरुम् आराध्य जीमूतवाहनं नाम पुत्र प्राप्नोत्।

(जीमूतकेतु ने कल्पवृक्ष की आराधना करके जीमूतवाहन नामक पुत्र प्राप्त किया।)

प्रश्न 5.

जीमूतवाहनः कीदृशः अभवत्?

(जीमूतवाहन कैसा हुआ?)

उत्तर :

जीमूतवाहनः महान् दानवीरः सर्वभूतानुकम्पी च अभवत्।

(जीमूतवाहन महान् दानवीर और सभी जीवों पर कृपा करने वाला हुआ।)

प्रश्न 6.

कस्मिन् अनुकूले स्थिते शक्रोऽपि बाधितुं न शक्नुयात्?

(किसके अनुकूल रहने पर इन्द्र भी बाधा नहीं पहुँचा सकता?)

उत्तर :

कल्पतरौ अनुकूले स्थिते शक्रोऽपि बाधितुं न शक्नुयात्।

(कल्पवृक्ष के अनुकूल रहने पर इन्द्र भी बाधा नहीं पहुँचा सकता।)

प्रश्न 7.

अस्मिन् संसारसागरे किम् वीचिवच्चञ्चलम्?

(इस संसार रूपी समुद्र में लहरों के समान क्या चंचल है?)

उत्तर :

अस्मिन् संसारसागरे आशरीरमिदं सर्वं धनं वीचिवच्चञ्चलम्।

(इस संसार रूपी समुद्र में इस शरीर से लेकर सम्पूर्ण धन लहरों के समान चञ्चल है।)

प्रश्न 8.

कः युगान्तपर्यन्तं यशः प्रसूते?

(कौन युगों तक यश उत्पन्न करता है?)

उत्तर :

परोपकारः युगान्तपर्यन्तं यशः प्रसूते।

(परोपकार युगों तक यश उत्पन्न करता है।)

प्रश्न 9.

जीमूतवाहनः किमर्थं कल्पपादपम् आराधयितुमिच्छति?

(जीमूतवाहन किसलिए कल्पवृक्ष की आराधना करना चाहता है?)

उत्तर :

जीमूतवाहनः परोपकारैकफलसिद्धये कल्पपादपम् आराधयितुमिच्छति।

(जीमूतवाहन परोपकार के फल की सिद्धि के लिए कल्पवृक्ष की आराधना करना चाहता है।)

प्रश्न 10.

कीदृशी वाक् कल्पतरोरुद्भूत्?

(कल्पवृक्ष से क्या वाणी प्रकट हुई?)

उत्तर :

"त्यक्तस्त्वया एषोऽहं यातोऽस्मि" इति वाक् तस्मात् तरोरुद्भूत्।

("तुम्हारे द्वारा छोड़ा गया मैं जा रहा हूँ" ऐसी वाणी उस वृक्ष से उत्पन्न हुई।)

प्रश्न 11.

कल्पतरुः दिवं समुत्पत्य किम् अकरोत्?

(कल्पवृक्ष ने आकाश में उड़कर क्या किया?)

उत्तर :

कल्पतरुः दिवं समुत्पत्य भुवि वसूनि अवर्षत्।

(कल्पवृक्ष ने आकाश में उड़कर पृथ्वी पर धन की वर्षा की।)

प्रश्न 12.

सर्वरत्नभूमिर्नगेन्द्रः कः अस्ति?

(सभी रत्नों का खजाना पर्वतराज कौन है?)

उत्तर :

सर्वरत्नभूमिर्नगेन्द्रः हिमवान् अस्ति।

(सभी रत्नों का खजाना पर्वतराज हिमालय है।)

प्रश्न 13.

जीमूतकेतुः कुत्र निवसति स्म?

(जीमूतकेतु कहाँ रहता था?)

उत्तर :

जीमूतकेतुः कञ्चनपुरनगरे निवसति स्म।

(जीमूतकेतु कञ्चनपुर नामक नगर में रहता था।)

प्रश्न 14.

जीमूतकेतोः पुत्रस्य किम् नाम आसीत्?

(जीमूतकेतु के पुत्र का क्या नाम था?)

उत्तर :

जीमूतकेतोः पुत्रस्य नाम जीमूतवाहनः आसीत्।

(जीमूतकेतु के पुत्र का नाम जीमूतवाहन था।)

**4marks**

प्रश्न 1.

राजा जीमूतकेतुः कम् यौवराज्येऽभिषिक्तवान्?

(राजा जीमूतकेतु ने युवराज पद पर किसका अभिषेक किया?)

उत्तर :

राजा जीमूतकेतुः स्वपुत्रं जीमूतवाहनं यौवराज्येऽभिषिक्तवान्।

(राजा जीमूतकेतु ने अपने पुत्र जीमूतवाहन का युवराज पद पर अभिषेक किया।)

प्रश्न 2.

अस्मिन् संसारे कः एकः अनश्वरः?

(इस संसार में क्या एक अविनाशी है?)।

उत्तर :

अस्मिन् संसारे एक परोपकारः एव अनश्वरः।

(इस संसार में एक परोपकार ही अविनाशी है।)

प्रश्न 3.

पृथ्वीमदरिद्रां कर्तुं कः कम् प्रार्थयति?

(पृथ्वी को निर्धनता से रहित करने की कौन किससे प्रार्थना करता है?)

उत्तर :

पृथ्वीमदरिद्रां कर्तुं जीमूतवाहनः कल्पतरुं प्रार्थयति।

(पृथ्वी को निर्धनता से रहित करने की जीमूतवाहन कल्पवृक्ष से प्रार्थना करता है।)

प्रश्न 4.

जीमूतवाहनः कस्मात् स्वमनोरथं साधयितुमिच्छति स्म?

(जीमूतवाहन किससे अपने मनोरथ को सिद्ध करना चाहता था?)

उत्तर :

जीमूतवाहनः कल्पतरोः स्वमनोरथं साधयितुमिच्छति स्म।

(जीमूतवाहन कल्पवृक्ष से अपना मनोरथ सिद्ध करना चाहता था।)

प्रश्न 5.

सर्वकामदः सदा पूज्यश्च कः कथितः?

(सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला और सदा पूजनीय किसे कहा गया है?)

उत्तर :

सर्वकामदः सदा पूज्यश्च कल्पतरुः कथितः।

(सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला और सदा पूजनीय कल्पवृक्ष को कहा गया है।)

प्रश्न 6.

'कल्पतरुः' इति पाठः कुतः संकलितः?

('कल्पतरुः' यह पाठ कहाँ से संकलित है?)

उत्तर :

'कल्पतरुः' इति पाठः 'वेतालपञ्चविंशतिः' इति कथासंग्रहात् संकलितः।

('कल्पतरुः' यह पाठ 'वेतालपञ्चविंशति' नामक कथा-संग्रह से संकलित है।)



7marks

### कल्पतरुः गद्यांशों के सप्रसंग हिन्दी सरलार्थ एवं भावार्थ

1. अस्ति हिमवान् नाम सर्वरत्नभूमिः नगेन्द्रः। तस्य सानोः उपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम्। तत्र जीमूतकेतुः इति श्रीमान् विद्याधरपतिः वसति स्म। तस्य गृहोद्याने कुलक्रमागतः कल्पतरुः स्थितः। स राजा जीमूतकेतुः तं कल्पतरुम् आराध्य तत्प्रसादात् च बोधिसत्त्वांशसम्भवं जीमूतवाहनं नाम पुत्रं प्राप्नोत्। सः जीमूतवाहनः महान् दानवीरः सर्वभूतानुकम्पी च अभवत्। तस्य गुणैः प्रसन्नः स्वसचिवैश्च प्रेरितः राजा कालेन सम्प्राप्तयौवनं तं यौवराज्ये अभिषिक्तवान्। कदाचित् हितैषिणः पितृमन्त्रिणः यौवराज्ये स्थितं तं जीमूतवाहनं उक्तवन्तः—“युवराज! योऽयं सर्वकामदः कल्पतरुः तवोद्याने तिष्ठति स तव सदा पूज्यः। अस्मिन् अनुकूले स्थिते सति शक्रोऽपि अस्मान् बाधितुं न शक्नुयात्” इति।

शब्दार्थ-हिमवान् = हिमालय। नगेन्द्रः = पर्वतों का राजा। सानोः उपरि = चोटी के ऊपर। विभाति = सशोभित है। कुलक्रमागतः = कुल परंपरा से प्राप्त हुआ। आराध्य = आराधना करके। दानवीरः = दानी। सर्वभूतानुकम्पी = सब प्राणियों पर दया करने वाला। सचिवैः = मन्त्रियों द्वारा। प्रेरितः = प्रेरणा से। अभिषिक्तवान् = अभिषेक कर दिया। यौवराज्ये = युवराज के पद पर। हितैषिणः = हित चाहने वालों के द्वारा। सर्वकामदः = सब इच्छाओं को पूर्ण करने वाला। शक्रः = इन्द्र। न शक्नुयात् = समर्थ नहीं होगा। बाधितुं = कष्ट पहुँचाने में।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'कल्पतरुः' में से उद्धृत है। यह पाठ संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कथा ग्रन्थ 'वेतालपञ्चविंशतिः' से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में जीमूतवाहन के घर के उद्यान में स्थित कल्पवृक्ष के महत्व के विषय में बताया गया है।

सरलार्थ-सभी रत्नों की भूमि पर्वतों का राजा हिमालय है। उसकी चोटी पर कञ्चनपुर नामक नगर सुशोभित है। वहाँ श्रीमान् विद्याधरपति जीमूतकेतु रहता था। उसके घर के उद्यान में वंश परम्परा से प्राप्त कल्पवृक्ष लगा हुआ था। राजा जीमूतकेतु ने उस कल्पवृक्ष की पूजा करके तथा उसकी कृपा से बोधिसत्त्व के अंश से उत्पन्न जीमूतवाहन नामक पुत्र को प्राप्त किया। वह महान्,

दानवीर तथा सब प्राणियों पर दया करने वाला था। उसके गुणों से प्रसन्न तथा मन्त्रियों से प्रेरित राजा ने उचित समय पर यौवन सम्पन्न अपने पुत्र जीमूतवाहन का युवराज के पद पर अभिषेक कर दिया। युवराज के पद पर स्थित उस जीमूतवाहन से उसके हितैषी पिता एवं मन्त्रियों ने कहा-“हे युवराज! जो यह सारी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला कल्पवृक्ष तुम्हारे उद्यान में स्थित है, वह तुम्हारे लिए सदा पूज्य है। इसके अनुकूल रहने पर इन्द्र भी हमें कोई बाधा नहीं पहुँचा सकता।”

भावार्थ-पौराणिक मान्यता के अनुसार कल्पवृक्ष एक ऐसा वृक्ष है, जो याचकों (माँगने वालों) की इच्छा की पूर्ति करता है। जीमूतवाहन के उद्यान में भी वही कल्पवृक्ष स्थित था। वह देवतुल्य था। इसलिए जीमूतवाहन के पिता ने कहा कि यह वृक्ष तुम्हारे लिए सदा पूजनीय है। इस वृक्ष की कृपा से इन्द्र भी तुम्हें पराजित नहीं कर सकते।

2 एतत् आकर्ण्य जीमूतवाहनः अचिन्तयत्-“अहो ईदृशम् अमरपादपं प्राप्यापि पूर्वेः पुरुषैः अस्माकं तादृशं फलं किमपि न प्राप्तम्। किन्तु केवलं कैश्चिदेव कृपणैः कश्चिदपि अर्थः अर्थितः। तदहम् अस्मात् कल्पतरोः अभीष्टं साधयामि” इति। एवम् आलोच्य सः पितुः अन्तिकम् आगच्छत्। आगत्य च सुखमासीनं पितरम् एकान्ते न्यवेदयत्-“तात! त्वं तु जानासि एव यदस्मिन् संसारसागरे आशरीरम् इदं सर्वं धनं वीचिवत् चञ्चलम्। एकः परोपकार एव अस्मिन् संसारे अनश्वरः यो युगान्तपर्यन्तं यशः प्रसूते। तद् अस्माभिः ईदृशः कल्पतरुः किमर्थं रक्ष्यते? यैश्च पूर्वैरयं ‘मम मम’ इति आग्रहेण रक्षितः, ते इदानीं कुत्र गताः?” तेषां कस्यायम? अस्य वा के ते? तस्मात् परोपकारैकफलसिद्धये त्वदाज्ञया इमं कल्पपादपम् आराधयामि।

शब्दार्थ-आकर्ण्य + एतत् = यह सुनकर। प्राप्यापि (प्राप्य + अपि) = प्राप्त करके भी। अमरपादपं = अमर वृक्ष को। पूर्वेः पुरुषैः = पूर्वजों के द्वारा। नासादितम् = नहीं प्राप्त किया। कृपणैः = कंजूस लोगों के द्वारा। साधयामि = मैं सिद्ध करता हूँ। अर्थितः = मांगा गया। अन्तिकम् = समीप। वीचिवत् = लहरों की भाँति। चञ्चलम् = नश्वर, क्षणिक। परोपकार = दूसरों का उपकार। यशः = यश। आराधयामि = मैं पूजा करता हूँ।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक ‘शेमुषी प्रथमो भागः’ में संकलित पाठ ‘कल्पतरुः’ से उद्धृत है। यह पाठ संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कथा ग्रन्थ ‘वेतालपञ्चविंशतिः’ से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि अपने पूर्वजों से प्राप्त कल्पतरु के द्वारा जीमूतवाहन ने परोपकार करने की इच्छा व्यक्त की।

सरलार्थ यह सुनकर जीमूतवाहन ने मन में विचार किया-“अरे! आश्चर्य है। ऐसे अमर वृक्ष को प्राप्त करके भी हमारे पूर्वजों ने ऐसा कोई भी फल प्राप्त नहीं किया और सिर्फ कुछ कंजूस लोगों के द्वारा थोड़ा धन ही माँगा गया। अतः मैं इस वृक्ष से अभीष्ट मनोरथ सिद्ध करता हूँ।” ऐसा सोचकर वह पिता के पास आया। आकर सुखपूर्वक बैठे हुए पिता से एकान्त में निवेदन किया-“पिता जी! आप तो जानते हैं कि इस संसार रूपी सागर में शरीर सहित सारा धन लहरों की भाँति चंचल (नश्वर) होता है। इस संसार में एक परोपकार ही अनश्वर है, जो युग के अन्त तक यश फैलाता है। यदि ऐसा है तो हम ऐसे कल्पवृक्ष की रक्षा क्यों कर रहे हैं?” जिन पूर्वजों ने ‘मेरा मेरा’ कहकर इस वृक्ष की रक्षा की, वे अब कहाँ गए? उनमें से यह किसका है? या इसके वे कौन हैं? तो आपकी आज्ञा से ‘परोपकार’ की फल सिद्धि के लिए मैं इस कल्पवृक्ष की आराधना करता हूँ।

भावार्थ-यह संसार समुद्र के समान है। इसमें धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि लहरों की तरह क्षणभंगुर हैं। इस संसार में केवल परोपकार ही एक ऐसी वस्तु है जो कभी समाप्त नहीं होती। प्रत्येक युग में परोपकारी मनुष्य का यश फैलता रहता है।

3. अथ पित्रा ‘तथा’ इति अभ्यनुज्ञातः स जीमूतवाहनः कल्पतरुम् उपगम्य उवाच-“देव! त्वया अस्मत्पूर्वेषाम् अभीष्टाः कामाः पूरिताः, तन्ममैकं कामं पूरय। यथा पृथ्वीम् अदरिदाम् पश्यामि, तथा करोतु देव” इति। एवंवादिनि जीमूतवाहने “त्यक्तस्त्वया एषोऽहं यातोऽस्मि” इति वाक् तस्मात् तरोः उदभूत्। क्षणेन च स कल्पतरुः दिवं समुत्पत्य भुवि तथा वसूनि अवर्षत् यथा न कोऽपि दुर्गत आसीत्। ततस्तस्य जीमूतवाहनस्य सर्वजीवानुकम्पया सर्वत्र यशः प्रथितम्।

शब्दार्थ-अभ्यनुज्ञातः (अभि + अनुज्ञातः) = अनुमति प्राप्त कर। कामाः = कामनाएँ, इच्छाएँ। पूरिताः = पूरी की गई। अदरिद्राम् = दरिद्रता से रहित, सम्पन्न। वाक् = वाणी, शब्द। दिवम् = स्वर्ग में। समुत्पत्य = उड़कर। भुवि = पृथ्वी पर। वसूनि = धन। अवर्षत् = बरसाया। दुर्गत = पीड़ित। सर्वजीवानुकम्पया = सब जीवों पर दया करने से। प्रथितम् = प्रसिद्ध हो गया।

प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक ‘शेमुषी प्रथमो भागः’ में संकलित पाठ ‘कल्पतरुः’ से उद्धृत है। यह पाठ संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कथा ग्रन्थ ‘वेतालपञ्चविंशतिः’ से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि जीमूतवाहन की प्रार्थना से कल्पवृक्ष ने स्वर्ग की ओर उड़ते हुए पृथ्वी पर अत्यधिक धन की वर्षा की।

सरलार्थ-पिता के द्वारा 'अच्छा ठीक है' इस प्रकार अनुमति पाकर कल्पवृक्ष के पास पहुँचकर जीमूतवाहन ने कहा-"हे देव! तुमने हमारे पूर्वजों की अभीष्ट इच्छाएँ पूरी की हैं तो मेरी एक इच्छा भी पूरी कर दो। आप इस पृथ्वी को निर्धनों से रहित कर दो देव।" जीमूतवाहन के ऐसा कहते ही उस वृक्ष से वाणी निकली, "तुम्हारे द्वारा इस तरह त्यागा हुआ मैं जा रहा हूँ।" उस कल्पवृक्ष ने क्षणभर में ही स्वर्ग की ओर उड़ कर पृथ्वी पर इतने धन की वर्षा की कि कोई भी निर्धन नहीं रहा। इस प्रकार सब प्राणियों पर दया करने से उस जीमूतवाहन का यश सब जगह फैल गया।

भावार्थ-दयालु एवं परोपकारी व्यक्ति सदा-सदा के लिए अमर हो जाता है। जीमूतवाहन ने परोपकार एवं निर्धनों पर दया करके अपने पूर्वजों की धरोहर कल्पवृक्ष का त्याग किया जिससे उसका यश सर्वत्र फैल गया।

v. अधोलिखित प्रश्नानाम् चतुषु वैकल्पिक उत्तरेषु उचितमुत्तरं चित्वा लिखत  
(निम्नलिखित प्रश्नों के दिए गए चार विकल्पों में से उचित उत्तर का चयन कीजिए)

1. हिमवानस्य सानोरुपरि किं नाम नगरं विभाति?

- (i) सज्जनपुरम्
  - (ii) चन्दनपुरम्
  - (iii) कञ्चनपुरम्
  - (iv) अमरपुरम्
- उत्तरम्:
- (iii) कञ्चनपुरम्

2. कुलक्रमागत कल्पतरुः कुत्र स्थितः?

- (i) राजप्रासादे
  - (ii) गृहोद्याने
  - (iii) राजोपवने
  - (iv) देवोद्याने
- उत्तरम्:
- (ii) गृहोद्याने

3. संसारसागरे किं वीचिवच्चञ्चलम् ?

- (i) वनम्
  - (ii) जनम्
  - (iii) धनम्
  - (iv) सर्वम्
- उत्तरम्:
- (iii) धनम्

4. अस्मिन् संसारे एकः कः अनश्वरः?

- (i) परोपकारः
- (ii) जीवनः
- (iii) नामः
- (iv) शरीरः

उत्तरम्:

(i) परोपकारः

5. कल्पतरुः दिवं समुत्पत्य भुवि कानि अवर्षत् ?

(i) जलानि

(ii) वसूनि

(iii) हिमानि

(iv) अन्नानि

उत्तरम्:

(ii) वसूनि

6. 'परोपकारः' अत्र किं विग्रहपदम्?

(i) परषाम् उपकारः

(ii) परेषाम् अपकारः

(iii) परेषा उपकारः

(iv) परेषाम् उपकारः

उत्तरम्:

(iv) परेषाम् उपकारः

7. 'गृहोद्याने' इति पदे कः समासः?

(i) तत्पुरुषः

(ii) कर्मधारयः

(iii) द्वन्द्वः

(iv) अव्ययीभावः

उत्तरम्:

(i) तत्पुरुषः

4. अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं पाठात् चित्वा लिखत  
(निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द पाठ से चुनकर लिखिए)

- (क) पर्वतः = .....  
 (ख) भूपतिः = .....  
 (घ) धनम् = .....  
 (ङ) इच्छितम् = .....  
 (च) समीपम् = .....  
 (छ) धरित्रीम् = .....  
 (ज) कल्याणम् = .....  
 (झ) वाणी = .....  
 (ञ) वृक्षः = .....

उत्तराणि:

- (क) पर्वतः = नगेन्द्रः  
 (ख) भूपतिः = राजा  
 (ग) इन्द्रः = शक्रः  
 (घ) धनम् = अर्थ  
 (ङ) इच्छितम् = अर्थित  
 (च) समीपम् = अन्तिकम्  
 (छ) धरित्रीम् = पृथ्वीम्  
 (ज) कल्याणम् = हितम्  
 (झ) वाणी = वाक्  
 (ञ) वृक्षः = तरुः

## कल्पतरु: (कल्प का वृक्ष) Summary in Hindi

### कल्पतरु: पाठ-परिचय

प्रस्तुत पाठ आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध कथा ग्रन्थ 'वेतालपञ्चविंशतिः' से संकलित है। यह ग्रन्थ पच्चीस कथाओं का संग्रह है। इस कथा में वेताल राजा विक्रम को एक-एक करके पच्चीस कथाएँ सुनाता है। ये कथाएँ अत्यन्त रोचक, भाव प्रधान और विवेक की परीक्षा लेने वाली हैं।

पाठ में वर्णित कथा के अनुसार विद्याधरपति जीमूतकेतु के घर के उद्यान में एक कल्पवृक्ष लगा हुआ था। जीमूतकेतु ने अपने पुत्र जीमूतवाहन को युवराज के पद पर बैठा दिया और कहा कि उद्यान में स्थित कल्पवृक्ष तुम्हारे लिए सदा पूज्य है। परोपकारी 'जीमूतवाहन ने सोचा मैं इस वृक्ष से अभीष्ट मनोरथ सिद्ध करूँगा। कल्पवृक्ष के पास पहुँचकर उसने कहा हे देव! तुमने हमारे पूर्वजों

की अभीष्ट इच्छाएँ पूरी की हैं, तो मेरी भी एक इच्छा पूरी कर दो। आप इस पृथ्वी को निर्धनों से रहित कर दो। उस कल्पवृक्ष ने पलभर में ही स्वर्ग की ओर उड़कर पृथ्वी पर इतने धन की वर्षा की कि कोई भी निर्धन नहीं रहा। इस प्रकार जीमूतवाहन ने कल्पवृक्ष से सांसारिक द्रव्यों को न माँगकर संसार के प्राणियों के दुःखों को दूर करने का वरदान माँगा। क्योंकि धन तो पानी की लहर के समान चंचल है, केवल परोपकार ही इस संसार का सर्वोत्कृष्ट तथा चिरस्थायी तत्त्व है।